ब्रिटिश कालीन भारतीय किसान आंदोलन

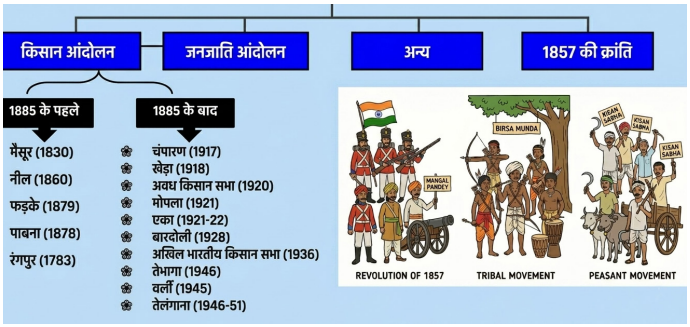

कारण

- शोषणकारी भूराजस्व नीतियां
  - स्थायी बंदोबस्त
  - रैयतवाड़ी
  - महालवाडी
- जमीदारों व महाजनो द्वारा शोषण
- झूम जैसी पारंपरिक कृषि पर रोक ।
- सामूहिक कृषि पर प्रतिबंध
- प्रथम विश्व युद्ध + रूसी क्रांति (1917) + आर्थिक महामंदी(1929)
- अन्य
  - नील दर्पण → दीनबंधु मित्र
  - हिंदू पैट्रियाट → हरिश्चंद्र मुखर्जी
  - अकाल

मुख्य कृषक आंदोलन

1. 1857 के पूर्व

1. रंगपुर, 1783
2. पागलपंथी 1824

2. 1857 से 1900

1. नील विद्रोह , 1859 -60
2. पाबना विद्रोह, 1873- 1876
3. दक्कन विद्रोह, 1875
4. फड़के, 1879
5. दिरांग, 1893

3. 1900 से 1947

1. पाइक, 1904
2. चंपारण सत्याग्रह, 1917
3. खेड़ा सत्याग्रह, 1918
4. मालाबार मोपला विद्रोह, 1921
5. संयुक्त प्रांत किसान आंदोलन, 1919-22
6. एका आंदोलन, 1921 -22
7. बारदोली सत्याग्रह, 1928
8. वर्ली आंदोलन, 1945
9. तेभागा आंदोलन, 1946
10. तेलंगाना आंदोलन, 1946 - 51

आंदोलन	क्षेत्र	नेतृत्व	प्रमुख तथ्य
रंगपुर आंदोलन (1783)	बांग्लादेश	धीरज नारायण	➤ जमीदार देवी सिंह के विरुद्ध
पागल पंथी विद्रोह (1824-1850)	गारो पहाड़ियाँ – बंगाल प्रेसीडेंसी	करमशाह का पुत्र टीपू मीर	➤ ब्रिटिश भू-राजस्व व्यवस्था व जमीदारों के विरुद्ध ➤ पागल पंथी एक अर्ध-धार्मिक समुदाय
नील विद्रोह (1859-1860) = 1857 की क्रांति के पश्चात प्रथम संगठित विद्रोह	बंगाल (लॉर्ड कैनिंग)	दिगम्बर विश्वास, विष्णु विश्वास व रफीक मंडल = "नील नइ, धान बोइ" (नील नहीं, धान बोएँगे)।	➤ क्षेत्र : नदिया, जेसोर, फरिदपुर, खुलना, राजशाही, पाबना, बर्दवान ➤ कारण :- ब्रिटिश अशिकारियों जबरन नील की खेती + रासायनिक नील ➤ परिणाम :- 31 मार्च 1860 को W. S. सीटोनकर की अध्यक्षता में नील आयोग– किसान को नील की खेती हेतु बाध्य नहीं किया जाएगा ➤ दिनबंधु मित्र : प्रसिद्ध नाटक "नील-दर्पण" ➤ हरिश्चंद्र मुखर्जी : 'हिंदू पैट्रियट' नामक साप्ताहिक समाचार ➤ ईश्वर चंद्र विद्यासागर : सोमप्रकाश नामक साप्ताहिक बांग्ला समाचार
पाबना विद्रोह (1873–1876) = अहिंसक व रचनात्मक	युसूफ शाही, बंगाल (लॉर्ड नॉर्थब्रुक)	ईशानचन्द्र राय, शंभूपाल, खोदी मल्लाह: किसान संघ	➤ जमीदारों के विरुद्ध ना कि अंग्रेजों के – "हम महारानी और सिर्फ महारानी की रैय्यत होना चाहते हैं" ➤ जमींदार दर्पण (नाटक) - मुशर्रफ हुसैन ➤ 1885 में बंगाल काश्तकारी अधिनियम पारित ➤ सुरेंद्रनाथ बनर्जी और आनंद मोहन बोस : इंडियन एसोसिएशन का समर्थन

दक्कन विद्रोह या दंगे (1875)	बम्बई प्रेसिडेंसी	-	कारण = महाजनों द्वारा शोषण - 1864 में अमेरिकी गृह युद्ध समाप्ति के पश्चात कपास की कीमतों में भारी गिरावट 1879 में दक्कन कृषक राहत act : साहूकारों द्वारा भूमि कब्ज़े पर रोक
दिरांग आंदोलन (1893-94)	असम	-	➤ कामरूप व दिरांग क्षेत्रों में भू राजस्व दरों में 50 से 70% की वृद्धि ➤ अन्य नाम = पथरूघाट विद्रोह ➤ 'रायज मेला': कर वृद्धि के विरोध में किसानों ने 'रायज मेला' नामक शांतिपूर्ण जन सम्मेलन आयोजित किए।
चंपारण सत्याग्रह (19 अप्रैल 1917) ***"डूंगळी चोर" (प्याज चोर) यह निकनेम महात्मा गांधी ने मोहनलाल पांड्या को दिया था, क्योंकि उन्होंने ब्रिटिश सरकार द्वारा ज़ब्त की गई ज़मीन से प्याज की फसल काटी थी***	बिहार = लॉर्ड चेम्सफ़ोर्ड	महात्मा गांधी	➤ कारण = नील की खेती के लिए तीन कठिया / तिनकठिया प्रथा ➤ 1916 के लखनऊ अधिवेशन में राजकुमार शुक्ल ने गांधीजी से निवेदन किया ➤ बृजकिशोर, सी एफ एंड्रूज, अनुग्रह नारायण सिन्हा, राजकिशोर प्रसाद, H. S. पोलाक, राजेन्द्र प्रसाद, महादेव देसाई, नरहरि पारिख, जे बी कृपलानी ➤ रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा गांधी जी को महात्मा की उपाधि ➤ एन जी रंगा द्वारा गांधी जी का विरोध ➤ 10 जून 1917 = चंपारण जांच समिति (1917) – एफ. जी. स्लाइड ➤ 4 मार्च, 1918 = चंपारण एग्रीकल्चरल एक्ट - नील की जबरन खेती का अंत ➤ यूरोपीय बागान मालिक अवैध वसूली का 25% हिस्सा किसानों को लौटा दे
खेड़ा सत्याग्रह (22 मार्च 1918)	खेड़ा (गुजरात) = लॉर्ड चेम्सफ़ोर्ड	महात्मा गांधी	➤ सरदार पटेल, इंदुलाल याग्निक, मोहनलाल पांड्या, विट्ठल भाई पटेल ➤ 1917-18 में अकाल : ब्रिटिश कानून के अनुसार फसल 25% से अधिक खराब होने पर किसान कर माफी के पात्र थे = कुनबी-पाटीदार किसानों ➤ जुलाई 1918 : गांधी जी द्वारा सत्याग्रह के तहत कर ना देने की मांग के कारण ब्रिटिश सरकार का आदेश कि लगान सिर्फ सक्षम लोगों से लिया जाए
मालाबार का मोपला विद्रोह (1921)	केरल = लॉर्ड चेम्सफ़ोर्ड	अली मुसलियार, कुंजहम्मद हाजी	➤ मोपला :- मालाबार तट पर निवास करने वाले अरब मूल के मुस्लिम किसान ➤ कारण - लगान की उच्च दरें, जमीदारों ब्रिटिश राज की शोषण कारी नीतियां ➤ अंग्रेजों द्वारा तिरुरांगड़ी मस्जिद में छापे के बाद हिंसात्मक स्वरूप ➤ वागोन त्रासदी (19 नवंबर 1921) = तिरुर से पोडनूर से कोयंबटूर की मालगाड़ी ट्रेन में 67 कैदियों की दम घुटने से मौत हो गई। ➤ 2500 से अधिक मोपलाओं की हत्या करने अंग्रेजों द्वारा विद्रोह का दमन

संयुक्त प्रान्त किसान सभा (1918 - इन्द्र नारायण द्विवेदी)	संयुक्त प्रान्त	अवध किसान सभा (1920 - बाबा रामचन्द्र)	➤ बाबा रामचंद्र (फिजी के गिरमिटिया मजदूर), जवाहरलाल नेहरू, मदनमोहन मालवीय, गौरी शंकर मित्र, दुर्गा पाल सिंह, झिंगुरी पाल सिंह आदि ➤ संयुक्त प्रान्त किसान सभा (1918, इलाहाबाद) : गोरीशंकर मिश्र, इन्द्र नारायण द्विवेदी, पं. मदन मोहन मालवीय ➤ 1919 में झींगुरीपाल सिंह व दुर्गापाल सिंह द्वारा प्रतापगढ़ के जमीदारों का सामाजिक बहिष्कार (नाई-धोबी बंद) ➤ 1929 = स्वामी सहजानंद सरस्वती द्वारा बिहार प्रांतीय किसान सभा ➤ 1931 = एन.जी. रंगा द्वारा आंध्र प्रांतीय रैयत सभा
एका आंदोलन (1921-22)	उत्तर प्रदेश	मदारी पासी	➤ गिरफ्तारियाँ, सशस्त्र पुलिस, दमनात्मक क़दम ➤ 1926 में आगरा काश्तकारी अधिनियम और 1939 में संयुक्त प्रांत काश्तकारी अधिनियम
बारदोली सत्याग्रह (1928) ***न्यू स्टेटमैन (लंदन) = इस आंदोलन के दूरगामी परिणाम होंगे*** ***KM मुंशी व लालजी नारंगी = बम्बई विधान परिषद की सदस्यता से त्यागपत्र*** ***बर्डोली की कहानी = महादेव देसाई***	बारदोली, सूरत, गुजरात = लॉर्ड इरविन	सरदार वल्लभ भाई पटेल	➤ सहयोगी :- महात्मा गांधी, मेहता बन्धु (कल्याण जी व कुंवर जी), दयालजी देशाई, केशवजी गणेश, नरहरि पारीख, जगतराम दवे ➤ कस्तूरबा गांधी, मीठू बेन, भक्तिबा, मनीबेन पटेल, शारदाबेन शाह, शारदा मेहता ➤ सूरत की कालिपराज जनजाति (गांधी जी द्वारा नाम परिवर्तन - रानीपराज) में प्रचलित हाली पद्धति (बंधुआ मजदूर) ➤ कपास की कम कीमत के बाद भी 30% लगान वृद्धि ➤ ब्रुमफील्ड और मैक्सवेल समिति = भूराजस्व दर को घटाकर 6.03% कर दिया ➤ गांधी जी व बारदौली की महिला = वल्लभ भाई पटेल को सरदार की उपाधि
अखिल भारतीय किसान सभा (11 अप्रैल 1936)	लखनऊ अधिवेशन	स्वामी सहजानंद सरस्वती – प्रथम अध्यक्ष	➤ प्रमुख नेता: एनजी रंगा (महासचिव), जेपी नारायण ➤ नारा : किराया कम करो या बंद करो ➤ कांग्रेस का 50वां सत्र : 1936 को फैज़पुर (जलगाँव, महाराष्ट्र)। गाँव में आयोजित होने वाला पहला कांग्रेस अधिवेशन। - अध्यक्ष: जवाहरलाल नेहरू
तेभागा आंदोलन (1946–47)	बंगाल	कम्पाराम सिंह एवं भवन	➤ "ते-भागा" = तीन भाग में से दो भाग किसान का (महिलाओं की बड़ी भागीदारी) ➤ जमींदार बर्गादार से आधा हिस्सा (50%) ले लेते थे ➤ फ्लूड कमीशन (1940) = बर्गादारों को 2/3 हिस्सा दिए जाने की सिफारिश ➤ बर्गादारी अधिनियम, 1950 = बर्गादार का अर्थ है "बटाईदार" या "साझेदार" जो किसी और की ज़मीन पर खेती करता है। ➤ पश्चिम बंगाल में "ऑपरेशन बर्गा" एक प्रमुख भूमि सुधार कार्यक्रम था

ब्रिटिश काल में जनजाति आंदोलन

(1) आर्थिक कारण:-

1. खूंट कट्टी (सामूहिक कृषि) व झूम कृषि पर प्रतिबंध
2. दमनकारी भूराजस्व नीतियों
3. 1822 में परम्परागत मदिरा पर आबकारी शुल्क
4. आदिवासी वन अधिकारों की समाप्ति व वनोत्पाद पर कर
5. अनुबंध श्रमिक व बेगारी
6. ठेकेदारी, महाजनो द्वारा शोषण

(2) राजनैतिक कारण:-

1. आदिवासी कानूनों की समाप्ति
2. आदिवासी क्षेत्रों में पुलिस व सैन्य प्रशासन

(3) सामाजिक हस्तक्षेप:-

1. आदिवासी परंपरा में ब्रिटिश व दिकुओं का हस्तक्षेप
2. उड़ीसा की खोंड जनजाति में प्रचलित नरबलि प्रथा की समाप्ति

(4) धार्मिक कारण :-

1. 1813 के अधिनियम के द्वारा इसाई मिशनरी को धर्म प्रचार की अनुमति
2. ईसाई मिशनरी द्वारा बलपूर्वक धर्मांतरण
3. धार्मिक आदिवासी नेताओं (ओझा, मसीहा आदि) द्वारा प्रोत्साहन

प्रमुख जनजाति विद्रोह

1. पूर्वी भारत व बंगाल

- कोल विद्रोह
- संथाल विद्रोह
- मुंडा विद्रोह
- खासी विद्रोह
- अहोम विद्रोह
- उरांव विद्रोह
- चुआर
- नागा आंदोलन

2. पश्चिम भारत

- रामोसी विद्रोह
- भील विद्रोह
- बिजौलिया

3. मध्य व दक्षिण भारत

- वेलुपंथी विद्रोह
- रम्पा विद्रोह
- चेंचू विद्रोह
- खोंड विद्रोह

आंदोलन	क्षेत्र	नेतृत्व	प्रमुख तथ्य
पहाड़िया विद्रोह (1778)	राजमहल पहाड़ी (झारखण्ड)	-	➤ राजमहल क्षेत्र में दामिन-ए कोह भूमि का एक बड़ा क्षेत्र था जिसे संथालों की भूमि घोषित किया गया था। ➤ दामिन-ए कोह - झारखंड (साहेबगंज, पाकुड़ और गोड्डा)
चुआड़ विद्रोह (1768-72)	मिदनापुर (पश्चिम बंगाल)	राजा बंशीधर	➤ कारण = अकाल + बढ़ा हुआ भू-कर = छापामार युद्ध पद्धति
हो-मुंडा विद्रोह (1820-37)	सिंहभूम (झारखंड)	राजा वंशधर	➤ कारण = राजस्व में बढ़ोत्तरी = गुरिल्ला पद्धति ➤ पारंपरिक माणकी-मुंडा (ग्राम प्रधान) और थाकुराई प्रणाली में हस्तक्षेप
वाघेरा विद्रोह (1818-20)	बड़ौदा (गुजरात)	-	➤ कारण = गायकवाड़ शासन द्वारा अत्यधिक कर-संग्रह
खासी विद्रोह (1828-33)	खासी, मेघालय	तिरोत सिंह	➤ कारण = असम-बंगाल (सिलहट) सड़क निर्माण को लेकर विवाद ➤ तिरोत सिंह को ढाका निर्वासित कर दिया गया = उनकी मृत्यु 1835 में हुई।
कोल विद्रोह (1831-32) = जनजातियाँ : हो, मुंडा, उरांव, भूमिज, कोल	छोटा नागपुर, सिंहभूमि, झारखंड	बुद्धो भगत	➤ कारण = भूमि छीन कर मुसलमान व सिख जैसे दिकू को प्रदान करना ➤ मुंडा-मानकी व्यवस्था (स्थानीय स्वशासन प्रणाली) = मुंडा गाँव का मुखिया और मानकी 15 से 20 गाँवों का मुखिया।
खोंड विद्रोह (1837-56)	दक्षिण-पश्चिम ओडिशा (गंजाम, कंधमाल क्षेत्र)	चक्र बिसोइ + राधा कृष्ण दंड सेना	➤ कारण = मरियान प्रथा (Human Sacrifice) पर ब्रिटिश रोक ➤ गवर्नर-जनरल हार्डिंग प्रथम (1848) ➤ कैप्टन Macpherson और Campbell ने दमन अभियान चलाया।

संथाल हुल आंदोलन/ (1855-56) पुराना नाम = नारीखंड / 'काजंगला'	दमन ए कोह (संथालों के लिए विशेष रूप से अलग रखा गया इलाका = राजमहल, झारखण्ड)	सिद्धू, कान्हू, चांद एवं भैरव मुर्मू ***सबसे शक्तिशाली व महत्वपूर्ण आदिवासी विद्रोह***	➤ कारण :- स्थाई बंदोबस्त + दिकूओं द्वारा 50 से 500% तक ब्याज + आदिवासी भूमि पर गैर-आदिवासियों का कब्जा + पुलिस व्यवस्था ➤ हुल दिवस (30 जून) = शंखनाद = झारखंड के भगनाडीह गाँव में ➤ संथालों ने 1855 में मेजर बारो नामक अंग्रेज कमांडर को हराया था। ➤ अगस्त 1855 में सिद्धू व फरवरी 1856 में कान्हू की गिरफ्तारी ➤ 1856 = ब्राउन व मेजर लॉयड द्वारा विद्रोह का क्रूरतापूर्वक दमन ➤ संथाल परगना काश्तकारी अधिनियम 1876 : संथाल परगना में आदिवासी ज़मीन को गैर-आदिवासियों को बेचने पर रोक लगाता है ➤ संथाल परगना का गठन (1855,उत्तर-पूर्वी झारखंड) = दुमका, देवघर, गोड्डा, पाकुड़, साहिबगंज और जामताड़ा।
सशस्त्र मुंडा विद्रोह (1899-1900) मुंडा/सरदारी/उलगुलान विद्रोह या महाविद्रोह	छोटा नागपुर (झारखण्ड)	बिरसा मुंडा	➤ कारण :- अंग्रेजों द्वारा सामूहिक खेती (खूंटकट्टी / मुंडारी) पर प्रतिबंध ➤ महाजनों का बढ़ता शोषण + शोषण मुक्त समाज व एकेश्वरवाद ➤ 9 जनवरी, 1900 = झारखंड की डोम्बारी बुरु पहाड़ी नरसंहार ➤ 3 फरवरी 1900 = सिंहभूमि (सेलरकैब पहाड़ी) से गिरफ्तार किया ➤ 9 जून 1900 = हैजा के कारण रांची जेल में मृत्यु ➤ 11 नवंबर 1908 = छोटा नागपुर काश्तकारी Act = गैर-आदिवासियों को भूमि के हस्तांतरण पर रोक + खूँटकट्टी को कानूनी मान्यता
चेंचू विद्रोह (1920)	नल्लमाला पहाड़ियाँ – आंध्र प्रदेश	सशस्त्र आदिवासी प्रतिरोध	➤ कारण : अंग्रेजों ने शिकार, मधु-संग्रह, जंगल-उत्पाद एकत्रीकरण पर रोक लगा दी।

बिरसा मुण्डा (धरती अब्बा/जगत पिता)

1. जन्म – 1875, लिहतु (रांची)
2. लोकप्रियता का आधार - औषधीय व चिकित्सीय निपुणता
3. ईसाई बने फिर वैष्णव धर्म
4. एकेश्वरवाद व नैतिक आचरण पर बल
5. अपने समर्थकों को सिंगबोंगा की पूजा
6. 10 नवंबर, 2021 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में घोषित करने को मंज़ूरी दी है। 15 नवंबर झारखंड राज्य का स्थापना दिवस भी है।

- 1899 में बिरसा मुंडा– "दिकुओं से हमारी लड़ाई होगी और उनके खून से जमीन इस तरह लाल होगी जैसे लाल झंडा" + महिलाओं की भागीदारी
- ज़मीन के जबरन अधिग्रहण को रोकना
- छोटा नागपुर काश्तकारी अधिनियम, 1908 के तहत, एक खूंट-कटटीदार की महिला को पैतृक संपत्ति पर उत्तराधिकार के अधिकार से बाहर रखा गया है

ताना भगत / उरांव आंदोलन (1914-1930)	झारखण्ड	जतरा भगत, बलराम भगत, गौ रक्षिणी भगत व देव मेनिया (महिला)	➤ प्रकृति : धार्मिक–सामाजिक सुधार + ब्रिटिश-विरोधी आंदोलन ➤ यह मूलतः गांधीवाद से प्रेरित अहिंसक व रचनात्मक आंदोलन था जो राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ गया ➤ 1922 में कांग्रेस के गया और 1923 के नागपुर सत्याग्रह में ➤ 1940 = गांधी को सम्मान स्वरूप 400 रुपये की थैली भेंट की थी

रम्पा विद्रोह / मान्यम विद्रोह (1879 व 1922)	आंध्रप्रदेश	राजू रम्पा (1879) तथा अल्लूरी सीताराम राजू (मान्यम वीरुडु - 1922)	➤ गोंड, कोंडा, कोरा, और चेंचू जैसे आदिवासी समुदायों ➤ पारंपरिक झूम खेती (पोडू) पर प्रतिबंध और वनों के उपयोग को नियंत्रित किया। ➤ अल्लूरी सीताराम राजू (गैर आदिवासी) :- गांधी जी की अहिंसावादी विचारधारा से प्रभावित किंतु गुरिल्ला युद्ध प्रणाली को अपनाया
नागा या जियारलांग आंदोलन	मणिपुर व नागालैंड	रोगमेई जदोनांग तथा रानी गैडिनल्यू	➤ मुख्य उद्देश्य : ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ लड़ना और रूढ़िवादिता तथा अतार्किक रीति-रिवाजों को समाप्त करना था। ➤ 29 अगस्त, 1931 = जदोनांग को फांसी। ➤ नेतृत्व 17 वर्षीय गाइदिन्ल्यू नामक नागा बालिका ने संभाला। ➤ 1937 में जेल में जवाहरलाल नेहरू से मुलाकात के दौरान उन्हें 'रानी' की उपाधि दी गई। ➤ स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण सम्मान से नवाजा।
रामोसी विद्रोह (1822-1841)	पश्चिमी महाराष्ट्र	तानाजी मालुसरे	➤ रामोसी — महाराष्ट्र की एक पारंपरिक योद्धा और आदिवासी जाति। ➤ चित्तर सिंह, उमा सिंह एवं नरसिंह दत्तात्रेय पंतकर

प्रमुख नागरिक आंदोलन

आन्दोलन	*स्थान*	*नेता*	*प्रमुख तथ्य*
1. संन्यासी विद्रोह	बंगाल (1770-1820)	शैवपंथी नागा संन्यासी, भावानी पांडे, गंगाराम, देवी चौधुरानी	➤ अकाल व तीर्थ यात्रा (हिंदू + मुस्लिम) नियंत्रण ➤ बंकिमचन्द्र चटर्जी = 'आनन्दमठ' एवं 'देवी चौधरानी' ➤ समर्थन : वियोजित सैनिकों और जमींदार ➤ वारेन हेस्टिंग्स ने लम्बे अभियान के बाद
2. फकीर विद्रोह	दीनाजपुर, रंगपुर और मालदा, बंगाल (1776-77)	मदारी समुदाय के मुखिया मजनू शाह	➤ देवी चौधरानी तथा भवानी पाठक ने भी फकीर विद्रोह में चिराग अली शाह का सहयोग किया।
3. फैराजी विद्रोह	बंगाल (1804-51)	हाजी शरीयतुल्ला + दूदू मियाँ	➤ उद्देश्य = मुस्लिम समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर ➤ रेड रिपब्लिकन्स = वहाबी आन्दोलन का सहयोग
4. वेलुथंपी विद्रोह (1808-09)	त्रावनकोर (केरल)	दीवान वेलुथंपी	➤ वेलेजली ने त्रावनकोर (केरल) के महाराजा को सहायक संधि करने को विवश किया ➤ वेलुथम्पी (नायर सेना) त्रावनकोर राज्य का दीवान था। वेलुथम्पी लड़ता हुआ मारा गया। मरने के बाद भी अंग्रेजों ने वेलुथम्पी को सार्वजनिक रूप से फाँसी पर लटकाया।
5. किट्टूरचेन्नमा (1824-29)	किट्टूर (कर्नाटक)	रानी चेन्नमा , रामप्पा	➤ 1824 ई. में किट्टूर के शासक शिवलिंग रूद्र की मृत्यु के बाद अंग्रेजों ने उसके गोद लिए हुए पुत्र को उत्तराधिकारी मानने से मना कर दिया। ➤ उसकी विधवा रानी चेन्नमा ने रामप्पा की सहायता से विद्रोह किया।

6. पाइक विद्रोह (1817-1825)	खुर्दा (उड़ीसा)	बक्शी जगन्नाथ मदलू पटनायक, कुर्मराज + मुकुंद देव	➤ पाइका: ओडिशा के गजपति शासकों द्वारा भर्ती किए गए सैन्य वर्ग ➤ निश-कर जागीर : यह एक प्रकार की वंशानुगत, लगान-मुक्त भूमि थी जो पाइका को उनकी सैन्य सेवाओं के लिए दी जाती थी। ➤ कारण = देशी शासन के पतन से पाइकाओं की स्थिति और आजीविका में तीव्र गिरावट + ब्रिटिश भूमि राजस्व नीति + रुपया-आधारित कराधान प्रणाली + नमक व्यापार पर भी नियंत्रण कड़ा कर ➤ केन्द्रीय बजट (2017-18) में पाइका विद्रोह के २०० वर्ष पूर्ण होने पर भव्य समारोह ➤ 2018 = सरकार ने स्मारक सिक्का और डाक टिकट जारी किया। ➤ पाइको को राजाओं, ज़मींदारों, ग्राम प्रधानों और साधारण किसानों का समर्थन ➤ एक सशस्त्र जन-विद्रोह।

अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC)

- **स्थापना:** 31 अक्टूबर 1920 को बंबई में।
- **संस्थापक अध्यक्ष:** लाला लाजपत राय।
- **उद्देश्य:** श्रमिकों के अधिकारों और कल्याण की रक्षा तथा अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) में भारत का प्रतिनिधित्व करना।
  - नारायण मल्हार जोशी ने अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के पहले वाशिंगटन शिखर सम्मेलन में भारतीय मज़दूरों का प्रतिनिधित्व किया
- संबद्धता: भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से संबद्ध।
- अंतर्राष्ट्रीय जुड़ाव: विश्व ट्रेड यूनियन महासंघ (WFTU) का संस्थापक सदस्य।